Artistic Narration Vol. XIV No. 1 Jan.-June 2023 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

समकालीन कला में लोक कला का प्रभाव

निधि
शोधार्थी
मेरठ कॉलेज, मेरठ
ईमेलः knidhi2831992@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

निधि

समकालीन कला में लोक कला का प्रभाव

Artistic Narration 2023, Vol. XIV, No. 1, Article No. 10 pp. 75-80

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

हमारे भारत देश की परम्परा के अंतर्गत अनेक प्रकार की लोक कलाएं विद्यमान है। भारत की लोक कलाएं सहज ढंग से हमारी पूर्वजों की संस्कृति और परम्परा को संजोये हुए है। आज भी त्योहार, उत्सव, शादी–ब्याह, पूजा पाठ के माध्यम से हम सब इसे निभा रहें हैं। कलाएँ दो वर्गो में विभाजित की गई है प्रथम ललित कला तथा द्वितीय उपयोगी कला दोनों ही कलाओं से लोककला का गहरा संबंध है। हमारे देश में सभी जगहों की कुछ खास लोक कलाएं प्रचलित है। उदाहरणः कलमकारी–आंध्रप्रदेश, कांथा–बंगाल, सांझी–मथुरा, चौकपूरना–उत्तर प्रदेश, मधुबनी–बिहार, पटचित्र–उड़ीसा, बंगाल, राजस्थान–पाबू जी का फड़ चित्र, मैसूर की लोक कलाए, लुसाई–मेघालय, तंचोल–गुजरात आदि।

लोक कला जीवन का एक ऐसा पहलू है जो हमें अपने पूर्वजों तथा वर्तमान में आपस में एक दूसरे से जोड़े रखती है। असित कुमार हल्दर के अनुसार– लोक कला परम्परागत कला का वह आवश्यक रूप है, जिसकी उपेक्षा गँवारू या उबड़ खाबड़ कला कहकर नही की जा सकती है। चूंकि इसका संबंध मानव की भावनाओं से सीधा है।

वर्तमान समय की बात करे तो चित्रकला के क्षेत्र में लोक तत्वों का नाता देखते ही बनता है। इन्ही चित्रकारो में कुछ प्रसिद्ध कलाकारों की चर्चा हो रही है। उदाहरणः जय झरोटिया एक जाने माने कलाकार एवं छापाकार है इनकी कलाकृतियों में रंग और रेखाओं का आकार लोक तत्वों के समान जान पड़ता है। ललित जैन दिल्ली में कार्यरत ग्रामीण तथा लोक शैली से प्रेरित नारी आकृतियाँ इनका विषय है। इसी क्रम में

निधि

माधवी पारेख, गौतम बाधेला, सीमा कोहली तथा दक्षिण भारत के कलाकार के माधव मेमन, रघुपति भट्ट लोक शैली से कुछ तत्वों को लेकर चित्रकता को नया रूप प्रदान कर रहे हैं।

प्रस्तावना

हमारे भारत देश की परम्परा के अंतर्गत अनेक प्रकार की लोक कलाएँ विद्यमान हैं। भारत की लोक कलाएं सहज ढ़ंग से हमारी पूर्वजों की संस्कृति और परम्परा को संजोये हुए है। आज भी त्योहार, उत्सव, शादी–ब्याह, पूजापाठ के माध्यम से हम सब इसे निभा रहें हैं। कलाएँ दो वर्गो में विभाजित की गई है प्रथम ललित कला तथा द्वितीय उपयोगी कला दोनों ही कलाओं से लोककला का गहरा संबंध है। हमारे देश में सभी जगहों की कुछ खास लोक कलाएं प्रचलित हैं। उदाहरणः– कलमकारी–आंध्रप्रदेश, कांथा–बंगाल, सांझी–मथुरा, चौकपूरना–उत्तर प्रदेश, मधुबनी–बिहार, पटचित्र–उड़ीसा, बंगाल, राजस्थान– पाबू जी का फड़ चित्र, मैसूर तन्जौर की लोक कलाएं, लुसाई–मेधालय, तंचोल गुजरात आदि।

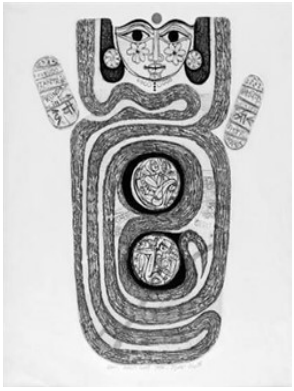

19वीं शताब्दी में दरबारी कला मर चुकी थी जबकि लोक परम्परायें बदली हुए अनेक रूपों में चली आ रही है। जैसा की हम जानते हैं कि हमारे भारत में लोक कलाएँ विविध रूपों में प्रचलित हैं त्योहार, उत्सव, शादी–ब्याह, पूजा–पाठ, इन्ही के माध्यम से ये हमारे जीवन में विद्यमान हैं।

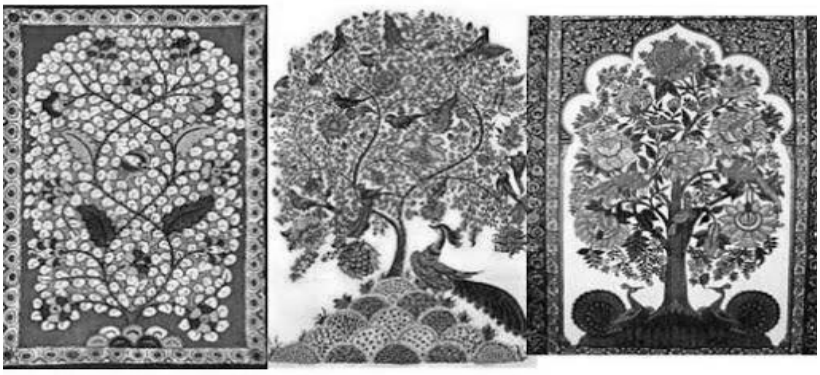

बात करें उद्योग के क्षेत्र में तो हस्तनिर्मित वस्तुओं की माँग बढ़ रही है हस्तनिर्मित वस्तुएँ जो सहस्तार्षो से हमारे घरो में उपयोग की जा रही है उत्तर प्रदेश के मैनपुरी शहर में 19 वी सदी में फ्रेडरिक सिमोन ग्राउस महोदय ने तारकसी पर अच्छा ज्ञान हासिल किया था। तारकसी अर्थात् लकड़ी के गुटके पर कील और तार के द्वारा चिड़िया, पदक आदि अभिकल्पन उकेरे जाते थे। इसका उपयोग सजावटी समान के तौर अत्यधिक होता था। आज भी कही–कही देखने को मिल जाते हैं। उद्योग की दृष्टि से लोककला का उपयोग कपड़ों पर छापा तथा कढ़ाई के रूप में हो रहा है, जगह–जगह के पारम्परिक परिधानों में जैसे सिल्क साड़ियाँ, चनियाचोली, घाघरा सभी में देखे जा सकते हैं। ठीक इसी तरह इनके अभिकल्पन आभूषण तथा चूड़ियों पर भी किये जा रहे हैं। आज कल के दौर में भी फैशन डिजाईन हस्तकरधा सभी क्षेत्र में भी काफी लोकप्रिय है।

मनोरंजन की दृष्टि से देखे तो इनके कई प्रकार हैं। हम बिहार की मधुबनी शैली को लेते हैं यह शैली जितवारपुर क्षेत्र में प्रचलित है महिलाएं एक साथ बैठ कर इसे बनाती है। लोगों में आपसी ताल–मेल की भावना जागृत होती है, एक दूसरे के प्रति अपनेपन का एहसास होता है, मधूबनी शैली को समाज के सम्मुख मजबूल शैली का रूप प्रदान करने का श्रेय महिलाओं को प्राप्त है।

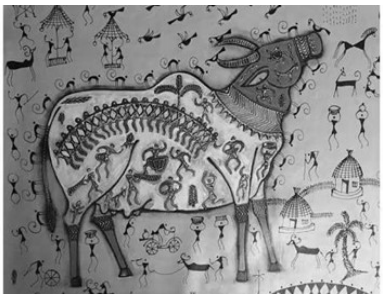

निधि

मनोरंजन के लिए लोक कलाओं का क्षेत्र बहुत बृहद नजर आता है। अपने मन को शांत करने के लिए हम लोक नृत्य, लोक संगीत तथा लोक चित्रकला का सहारा लेते हैं लोक नृत्य को एक सामुदायिक नृत्य भी कहा जा सकता है। मध्यप्रदेश में गणगौर नृत्य उत्तर प्रदेश में नौटंकी, बिहार की छाऊ, महाराष्ट्र की लावनी, छत्तीसगढ़ की पंथी नृत्य राजस्थान की धूमर आदि राजस्थान के नाम लेते ही एक खास नृत्य की बात याद आती है, जो किसी मनुष्य के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से कठपुतलियों द्वारा किया जाता है। यह राजस्थान में मनोरंजन का सशक्त माध्यम है। अनेक प्रकार के नृत्य प्रचलित हैं, इसी तरह लोक गीत भी हैं जैसे चौमासा, बारहमासा, कजरी, झूला, हिडोला, आल्हा इत्यादि। महात्मा गांधी ने कहा था कि– लोक गीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं, उत्सव मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कंठी में लोक समूह लोक गीत गाते हैं।

लोक कला जीवन का एक ऐसा पहलू है जो हमें अपने पूर्वजों तथा वर्तमान में आपस में एक दूसरे से जोड़े रखती है। असित कुमार हल्दर के अनुसार–लोक कला परम्परागत कला का वह आवश्यक रूप है, जिसकी उपेक्षा गँवारू या उबड़ खाबड़ कला कहकर नही की जा सकती है। चूंकि इसका संबंध मानव की भावनाओं से सीधा है।

दृश्य कला अर्थात् चित्रकला के परिप्रेक्ष्य से समकालीन कला पर इनकी छाप अत्यधिक गहरी वर्तमान समय में इनका वृहद प्रयोग हो रहा है। समाज के हर पहलू पर यह अपने विकसित रूप में हमारे सामने सहज ही आ जाती है। ललित कला हो या उपयोगी कला दोनों ही क्षेत्रों में लोक कलाएं अपना गौरवान्वित स्थान बनाये हुए है। गहराई में जाने पर हम पाते हैं कि इनकी उत्पत्ति प्रागैतिहासिक से शुरू हो चुकी थी। शनैः शनैः यह ग्रामीण क्षेत्र से निकलकर हमारे बीच हमारी जानी पहचानी साथी के रूप में प्रचलित है। अपनी सहज सरल अभिव्यक्ति के कारण वैश्विक स्तर पर उभरकर सामने आ रही है। चित्रकला से इन लोक कलाओं का कितना गहरा संबंध है, यहाँ पर हम इस विषय के बारे में विचार विमर्श करेंगे। आमतौर पर यह अपने स्थानीय आधार पर अपने साधारण रूप में फलती–फूलती रही।

16वीं शताब्दी में आने पर इन कलाओं का विकसित रूप हमें राजस्थानी शैली में नजर आता है। लोक कला ही इन शैली का मूल आधार रही है। राजस्थानी शैली को चार भागो में बाटा गया जिसमें मारवाड़ की उपशैली, जोधपूर शैली, स्थानीय लोक कला से प्रेरित जान पड़ती है। जोधपुर शैली के अंतर्गत लोक जीवन, लोक गाथाओं के चित्रण जिसमें ढोलामारू ऊजली जेठवा, भूमलदे, निहालदे आदि चित्रित हुई, इन चित्रों में शुद्ध मारवाड़ी लोक शैली का प्रभाव है। जोधपुर में कृष्ण भक्ति आंदोलन में लोक कथाओं का अंकन माना जाता है। यह 17वीं से 18वीं शताब्दी में विकसित हुई है। तत्पश्चात हम बात करते हैं पहाड़ी कला की जिसका समय काल 17वीं शताब्दी माना जाता है। यह पंजाब तथा जम्मू की पहाड़ी

रियासतों की लोक कला से पनपी बहुत प्रसिद्ध शैली है। इस कला पर मुगलो का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। पहाड़ी कला की सबसे प्राचीन शैली बसोली शैली पर स्थानीय लोक कला का अधिपत्य है।

यह तो बात हुई ठेठ शैली को लेकर चलने वाली कलाकारों की परन्तु 19वीं शदी के मध्य कुछ कलाकारों ने लोक तत्वों का प्रयोग अपनी चित्रकारी में किया है। शायद जाने अनजाने उन पर लोक कला की गहरी छाप पड़ी। जैसे जानी मानी कलाकार अमृता शेरगिल पहाड़ी की बसोली लोक कला से प्रेरित थी। नारायण श्री धर बेन्द्रे (इन्दौर 1910) की नारी आकृतियाँ बसोली से प्रेरित मानी जाती है। मध्य प्रदेश में जन्में एस.एच. रजा की बिन्दू शीर्षक में ज्यामितीय आकार लोक तत्वों की देन है। भारत का पिकासों कहे जाने वाले मकबूल फिदा हूसैन की आड़ी तिरछी रेखाएँ हमें लोक कला के रेखाओं की याद दिलाती है। महाराष्ट्र मे जन्मी बी. प्रभा की ग्रामीण नारी आकृति लोक कला से प्रेरित है। कोयम्बटुर, तमिलनाड् के प्रसिद्ध कलाकार के सी. एस. पनिक्कर की रचनाये तांत्रिक भाव लिए लोक शैली के रंग तथा रेखाओं की याद दिलाती हैं। के.जी सुक्रमण्यम (केरल) के पूसेरा पल्ली की कहानी को देखते ही सहज ही लोक कला की ओर रूझान हो जाता है। के. श्रीनिवासलूलू तथा ए. रामचन्द्रन की कलाकृतियाँ देखकर हम लोककला की ओर असहज ही मुड़ जाते हैं।

वर्तमान समय की बात करें तो चित्रकला के क्षेत्र में लोक तत्वों का नाता देखते ही बनता है। इन्ही चित्रकारो में कुछ प्रसिद्ध कलाकारों की चर्चा हो रही है। उदाहरणः– जय झरोटिया एक जाने माने कलाकार एवं छापाकार हैं इनकी कलाकृतियों में रंग और रेखाओं का आकार लोक तत्वों के समान जान पड़ता है। ललित जैन दिल्ली में कार्यरत ग्रामीण तथा लोक शैली से प्रेरित नारी आकृतियाँ इनका विषय है। इसी क्रम में माधवी, पारेख, गौतम बाधेला, सीमा कोहली तथा दक्षिण भारत के कलाकार के माधव मेमन, रघुपति भट्ट लोक शैली से कुछ तत्वों को लेकर चित्रकला को नया रूप प्रदान कर रहे हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लेख के द्वारा हमने भारतीय लोक कलाओं के क्षेत्र और उनके महत्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। भारत की समकालीन गतिविधियों को समझने के लिए हमें लोक कलाओं के प्रभाव को समझना अति आवश्यक होगा। लोक कला की परम्परा में रेखा तथा रंग की निरंतरता प्रतिबिम्बित होती है, जो हमारे देश की प्रमुख पहचान है। वर्तमान समय में कलाकार इन आकारों की सुन्दरता से भली–भांति परिचित है और दृश्यकाल में इसका प्रयोग हो रहा है। भारत सरकार लोक कला को संरक्षित तथा बढ़ावा देने के लिए बहुत से हस्तनिर्मित उद्योग, हस्तकरधा उद्योग खोल रही है। ललित कला हो या उपयोगी कला सभी क्षेत्रों में इन कलाओं का अपना ही महत्व है, हमें भी इन कलाओं के प्रति अपनी उदार भावनाएं रखनी चाहिए क्योंकि इन्ही में हमारी परम्परा और संस्कृति निहित है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गैरोला, वचस्पति. भारतीय चित्रकला. प्रथम संस्करण. मिश्र प्रकाशन प्रा.लि.ः इलाहबाद. पृष्ठ **73.**
2. कुमार, सुनील. (2000). भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक तक. भारतीय कला प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **20–22.** आई.एस.बी.एन. – 81–86050–36–1.
3. पाण्डेय, छबिनाथ. मुद्रण कला. प्रथम संस्करण. पटना. पृष्ठ **1–15.**
4. कुमार, सुनील. (2000). भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक तक. भारतीय कला प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **34–50.** आई.एस.बी.एन. – 81–86050–36–1.
5. सखालकर, रवि. (2015). आधुनिक चित्रकला का इतिहास. 29वां संस्करण. जयपुर. पृष्ठ **312–19.** आई.एस.बी.एन. – 978–93–5131116–4.
6. मांगो, प्राणनाथ. भारत की समकालीन कला. एक पारीपेक्ष्य. पृष्ठ **65.**